लड़का जो सूरज के बहुत पास उड़ा

लिसल

लड़का जो सूरज के बहुत पास उड़ा

लिसल

एक बार प्राचीन ग्रीस में,

इकारस नाम का एक लड़का रहता था.

उस काल में ज़िंदगी बहुत अलग थी,

लेकिन बच्चे बिल्कुल वैसे ही थे जैसे वे आज हैं.

इकारस अपने पिता के साथ एक द्वीप पर रहता था.
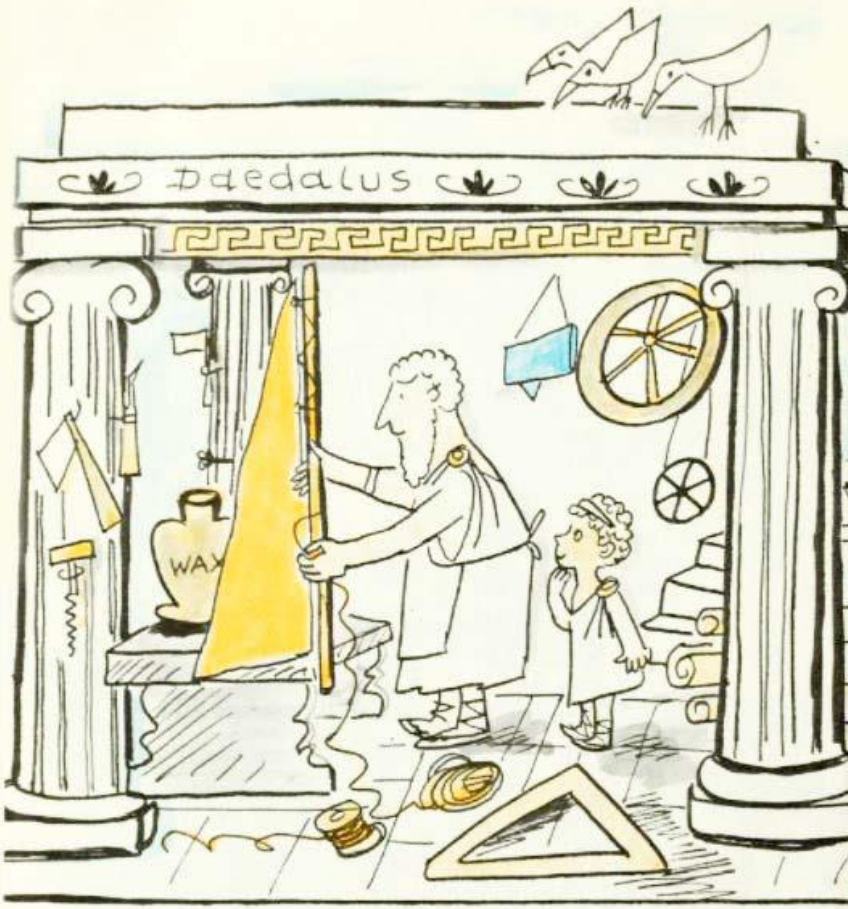
उसके पिता एक प्रसिद्ध आविष्कारक थे.
उन्होंने तरह-तरह औजार और खिलौने बनाए थे.

उन्होंने एक सेलबोट (पाल वाली नाव) का भी आविष्कार किया और इकारस ने उस नौका में सवारी भी की.

एक दिन इकारस के पिता ने
सबसे नायाब चीज़ का
आविष्कार किया!

सबसे पहले उन्होंने एक
लकड़ी का फ्रेम बनाया...

फिर उन्होंने छोटे-बड़े सभी
प्रकार के पंख इकट्ठे किए . . .

और फिर उन्होंने पंखों को मोम से फ्रेम पर चिपका दिया.

और इस तरह उन्होंने बड़े पंखों की एक जोड़ी बनाई!

अब वो एक पंछी की तरह उड़ सकते थे!

वो अपने पंखों से इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने इकारस
के लिए भी पंखों की एक छोटी जोड़ी बनाई.
अब इकारस भी उड़ सकता था!

इकारस और उसके पिता प्रतिदिन समुद्र
के ऊपर उड़ने का अभ्यास करते थे.

उन्हें वो बहुत अच्छा लगता था!

फिर, अपनी दैनिक उड़ानों में एक बार,
इकारस ने देखा कि सबसे नन्हें पक्षी भी उससे अधिक ऊंची उड़ान भर रहे थे.
तब इकारस ने कहा, "मैं पक्षियों की तरह ऊंची उड़ान भरना चाहता हूं."
"मैं जानता हूं कि मैं वो कर सकता हूं!"
लेकिन उसके पिता ने उसे वो करने नहीं दिया.
"देखो, सूरज बहुत गर्म है और समुद्र बहुत गहरा है," उन्होंने इकारस को चेतावनी दी.
"इसलिए हमें सावधानी बरतनी चाहिए, मेरे बेटे."
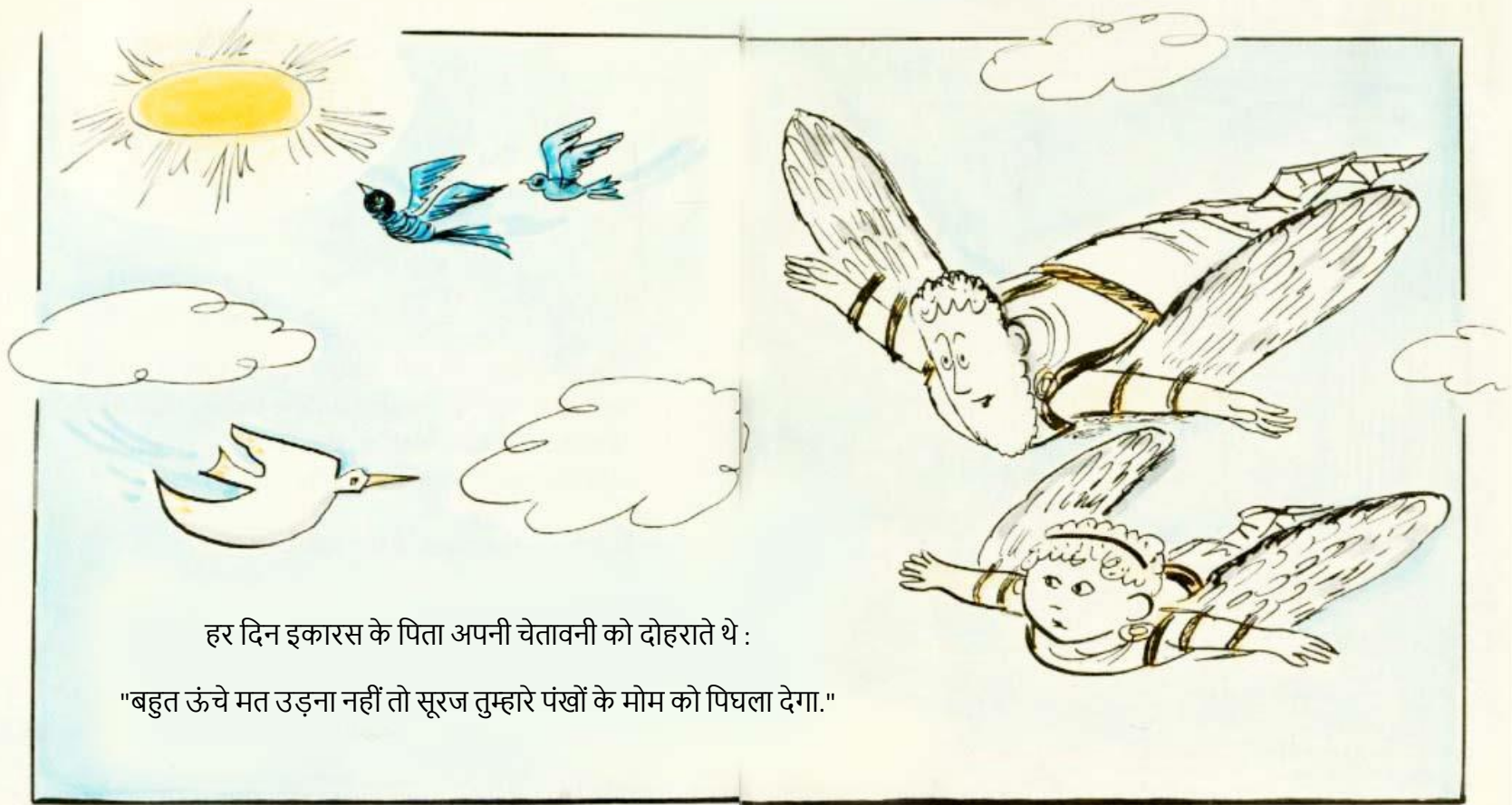
हर दिन इकारस के पिता अपनी चेतावनी को दोहराते थे :

"बहुत ऊंचे मत उड़ना नहीं तो सूरज तुम्हारे पंखों के मोम को पिघला देगा."

पर एक सुबह, जब उसके पिता सो रहे थे,

तब इकारस अपने घर से बाहर निकला.
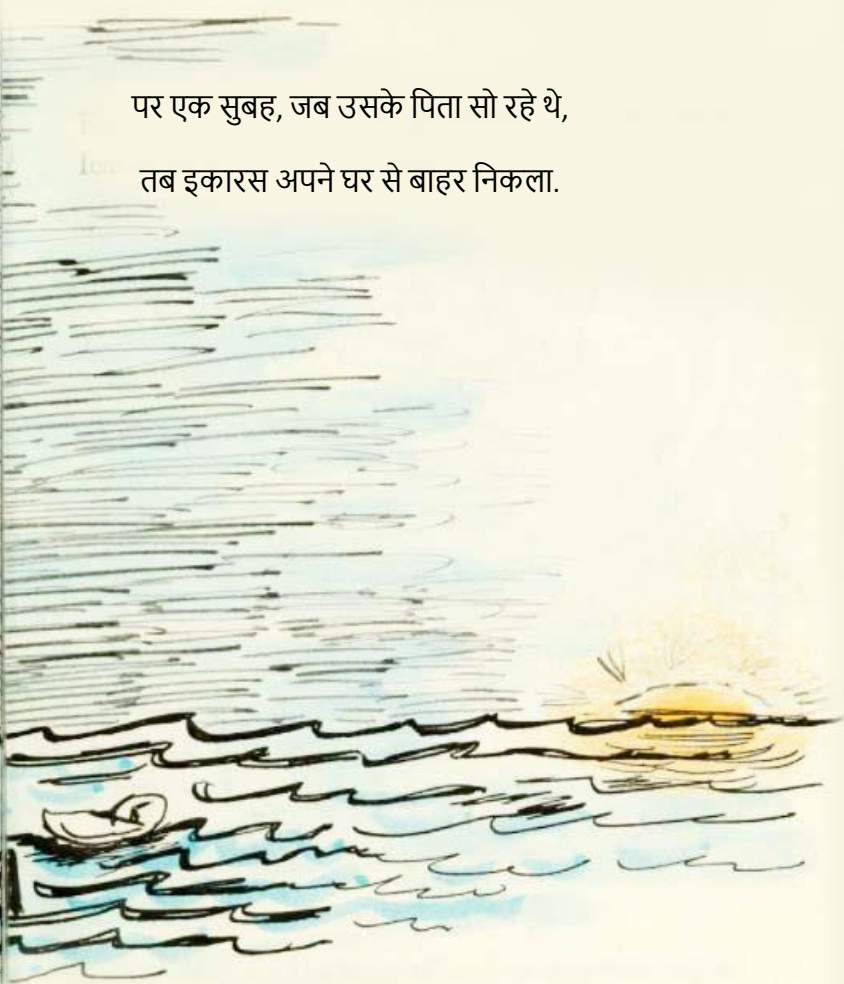
उसने अपने पंख लगाए और फिर ठंडे, नीले आकाश में उड़ने लगा.

उसको वो बहुत अद्‌भुत लगा!

उसने हवा में कुछ कलाबाज़ियां भी लगाईं.

फिर उसने अपने ऊपर उड़ते पक्षियों को देखा.

"मैं भी उनके जैसी ऊंची उड़ान भर सकता हूं," उसने सोचा.

वो अपने पिता की चेतावनी को बिल्कुल भूल गया.
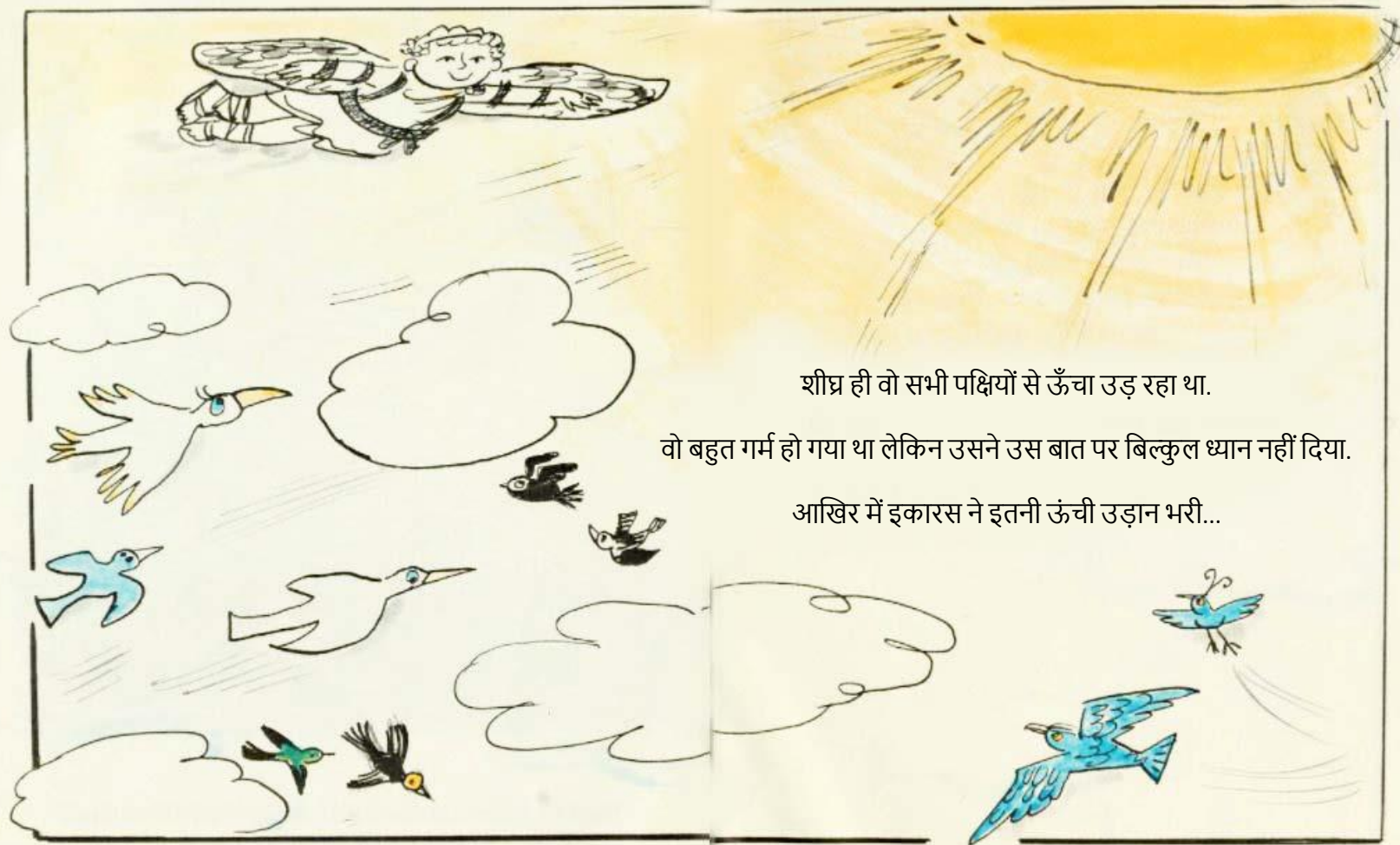
शीघ्र ही वो सभी पक्षियों से ऊँचा उड़ रहा था.

वो बहुत गर्म हो गया था लेकिन उसने उस बात पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया.

आखिर में इकारस ने इतनी ऊंची उड़ान भरी...

वो ऊंचा और ऊंचा उड़ने लगा. उसे उसमें बहुत मज़ा आ रहा था!

...कि सूरज की गर्मी ने उसके मोम के पंखों को पिघला दिया.
पंख पिघलकर गिर गए और इकारस गहरे समुद्र में गिरने लगा.
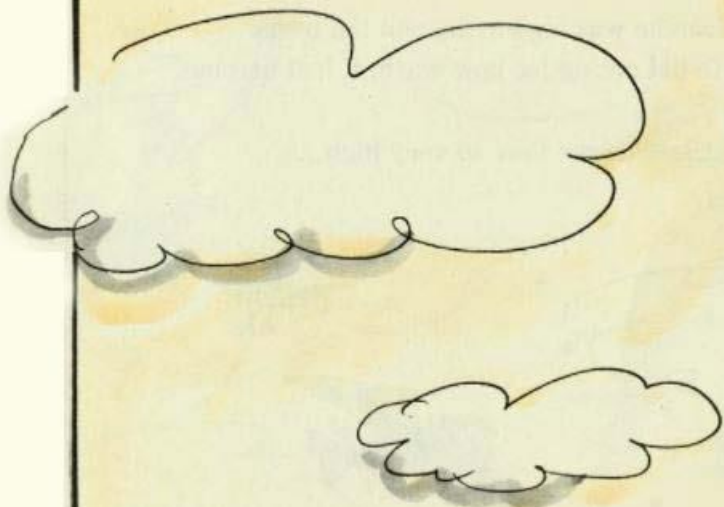
"पिताजी, प्रिय पिताजी, कृपा मेरी मदद करें!" वो चिल्लाया.

"मैं दुबारा फिर कभी ऐसी गलती नहीं करूँगा!"

लेकिन उसके पिता मदद करने के लिए वहां मौजूद नहीं थे.

और अब इकारस बहुत तेज़ी से नीचे की ओर गिर रहा था.

वो गिरना बिल्कुल भी मजेदार नहीं था.

इकारस की चीख-पुकार सुनकर
उसके पिता की आँख खुल गई.

उन्होंने इकारस को हर जगह खोजा,
लेकिन वो उन्हें कहीं नहीं मिला.
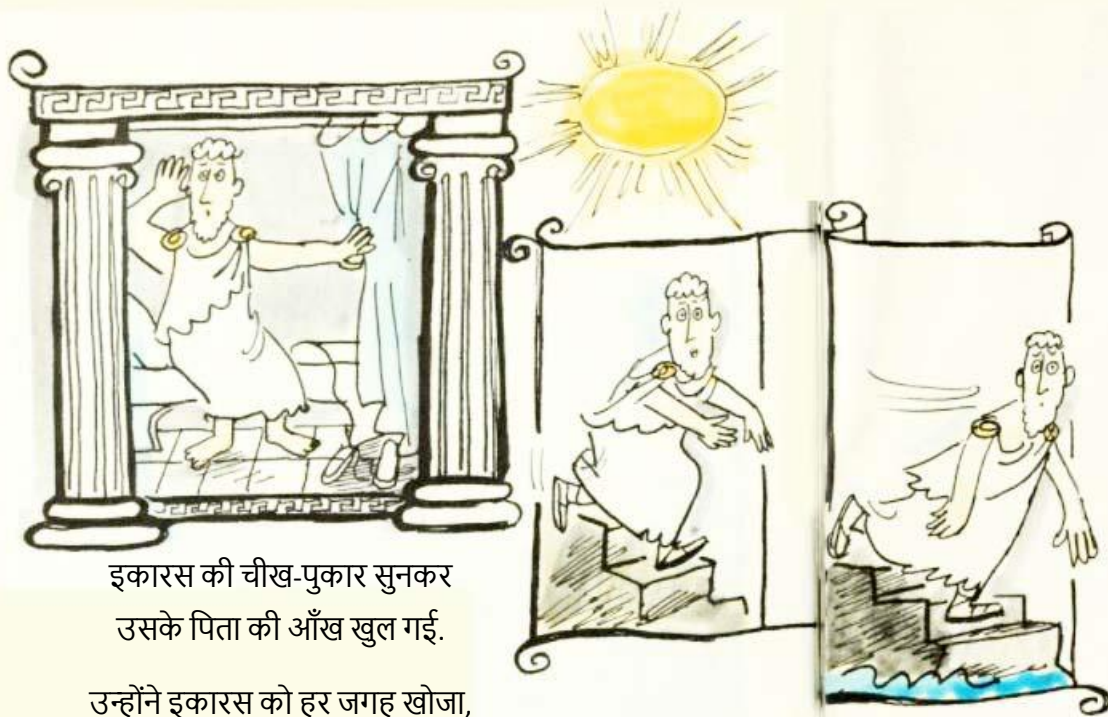
उन्हें लहरों पर केवल कुछ पंख तैरते हुए मिले.

आज भी लोग इकारस की कहानी सुनाते हैं - उस लड़के की जो सूरज के बहुत पास उड़कर गया था.

जिस स्थान पर वो गिरा था उसे इकारस की याद में "इकरियन सागर" बुलाया जाता है.

यह प्रसिद्ध कहानी एक मिथक है. इसके कुछ भाग शायद उन घटनाओं पर आधारित हों जो वास्तव में घटी हों. पर कोई भी उनकी सच्चाई को पक्की तौर पर नहीं जानता है.

समाप्त